اگست ۲۰۰۵ء

ماہنامہ

شعاع عمل

لکھنؤ

قَالَ اللہُ تبارک و تعالیٰ

قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللہِ نُوْرٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب

مؤسسۂ نور ہدایت حسینیۂ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

Postal Regd.No.SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

लखनऊ

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष–2

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 2

माह अगस्त 2005 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
''लखनऊ''

वार्षिक – 200 रु | मिलने का पता | क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपरइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

६ 15 रसूल बारगाहे ख़ुदा में दुआ करते थे ''ऐ अल्लाह! मैं उस बेटे से तेरी पनाह चाहता हूँ जो कि तेरा फरमाँबरदार होने के बजाए मुझ पर हुक्म चलाए, उस माल से भी तेरी पनाह चाहता हूँ जो फायदा दिये बग़ैर बर्बाद हो जाए, उस औरत से भी तेरी पनाह चाहता हूँ जो वक़्त से पहले अपनी हिमाक़त और बद एख़लाक़ी की वजह से बूढ़ा कर दे और मक्कार दोस्त से भी तेरी पनाह चाहता हूँ।''

६ जो शख़्स ग़लत ख़्वाहिशों को छोड़ दे वह आज़ाद है। (इमामे अली अ0)

६ लालच तुम्हें गुलाम न बना ले जबकि ख़ुदा ने तुम्हें आज़ाद पैदा किया है। (इमामे अली अ0)

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

आयतुल्लाह सैय्यिद मुहम्मद हुसैन तबातबाई (ताबा सराह)
मुतरजिम : जनाब असर नक़वी जायसी

विलादत : 3 शाबान 4 हिजरी
शहादत : 10 मोहर्रम 61 हिजरी

अली (अ0) और फातिमा (स0) के दूसरे साहबज़ादे सैय्यिदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन (अ0) 4 हिजरी में पैदा हुए और हज़रत इमाम हसने मुजतबा (अ0) की शहादत के बाद हुक्मे इलाही और अपने भाई की वसिय्यत के मुताबिक़ इमाम मुक़र्रर हुए। (इरशाद पेज–176) हज़रत इमाम हुसैन (अ0) दस साल की मुद्दत तक इमाम रहे और मुद्दते इमामत के आख़री छः माह आपने खलीफ–ए–वक़्त मुआविया के जौरो सितम की वजह से इन्तिहाई ईज़ा रसानी के आलम में गुज़ारे। इन बातों की सबसे पहली वजह तो यह थी कि मज़हब के उसूल व ज़वाबित की क़द्रें बिलकुल पामाल हो गयीं थीं। और हुकूमते बनी उमैय्या को पूरा इक़्तेदार और ताक़त हासिल हो गयी थी। दूसरे यह कि मुआविया और उसके मददगारों ने अहलेबैते अतहार और उनके शीओं को पसे पुश्त डाल दिया था, और इस तरह वह हज़रत अली (अ0) और उनके अफ़रादे ख़ानदान का नाम व निशान मिटा देना चाहते थे। इसकी सबसे बड़ी वजह यह थी कि मुआविया अपने उस बेटे यज़ीद की ख़िलाफत के लिए राह हमवार करना चाहता था जिसकी बदकिरदारी की वजह से मुसलमानों की एक बड़ी तादाद उसके ख़िलाफ थी। बहरहाल, इस मज़ाहमत को रोकने के लिए मुआविया ने सख़्त तशद्दुद आमेज़ रवैय्या इख़्तियार किया और हज़रत इमाम हुसैन (अ0) को उन दिनों मुआविया और उसके मददगारों की तरफ से सख़्त तकलीफें झेलने और दिमाग़ी उलझन नीज़ रूहानी तकलीफ से ज़बरदस्ती दोचार रहने पर मजबूर किया गया। यहाँ तक कि 60 हिजरी में मुआविया का इन्तेक़ाल हो गया, और उसके बेटे यज़ीद ने उसकी जगह संभाल ली।

(इरशाद पेज–182)

हुसूले बैअत अरब का एक पुराना दस्तूर था जो बादशाहत और हुकूमत जैसे अहम उमूर में तलब की जाती थी। जिसमें रिआया और ख़ास तौर से अवाम के अन्दर मौजूद मशहूर शख़्सियतें इताअत के तौर पर अपना हाथ हाकिमे वक़्त या शहज़ादे के हाथ में देती थीं। वह लोग यह मुआहदा करते थे कि वह हुकूमत के वफादार रहेंगे। और इस तरह वह हुकूमत के काम में अपनी हिमायत ज़ाहिर करते थे। इताअत के मुआहदे के बाद उसकी ख़िलाफवर्ज़ी को हुक्मे उदूली तसव्वुर किया जाता था और सरकारी तौर पर किसी मुआहदे पर दस्ख़त करके उसे तोड़ देने की तरह उसे एक जुर्म तसव्वुर किया जाता था। पैग़म्बरे इस्लाम की तरफ से पेश की गयी मिसाल के मुताबिक़ लोग इसी मुआहद–ए–इताअत को बावज़न और बावक़अत समझते थे जो किसी दबाव के तहत नहीं बल्कि आज़ादाना तौर पर किया जाता था।

मुआविया ने उस दौर की मशहूर शख़्सियतों से कहा कि यज़ीद की बैअत कर लें लेकिन अपनी यह दरख़्वास्त इमाम हुसैन (अ0) पर मुसल्लत नहीं की। (मनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द चार पेज–88) अपनी आख़री वसिय्यत में मुआविया

ने यज़ीद से कहा था कि अगर हुसैन (अ0) बैअत करने से इन्कार कर दें तो वह उस पर ख़ामोश रहे और मामले को नज़र अन्दाज़ कर दे क्योंकि वह उन नताएज से बाख़बर था जो बैअत के लिए दबाव डालने की सूरत में पेश आ सकते थे। लेकिन अपनी अनानियत और नाआक़िबत अन्देशी की वजह से यज़ीद ने अपने बाप की इस नसीहत को नज़र अन्दाज़ कर दिया और अपने बाप के इन्तेक़ाल के बाद हाकिमे मदीना के नाम यह फरमान भेजा कि वह हुसैन (अ0) से या तो उसकी बैअत ले या उनका सर दमिश्क़ भेज दे।(मनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द चार पेज–88)

मदीने के गवर्नर की तरफ से इमाम हुसैन (अ0) को इस मुतालबे से मुत्तला किये जाने के बाद आप ने इस पर ग़ौर करने के लिए मोहलत माँगी और शब के पर्दे में अपने अफ़रादे ख़ानदान के साथ मक्का की तरफ रवाना हो गये और खाना काबा में पनाह ली, जो इस्लाम में शरअी तौर से सलामती और पनाह का मरकज़ है। यह वाक़ेआ माहे रजब 60 हिजरी के अवाख़िर और शाबान की इब्तेदा में पेश आया। तक़रीबन चार माह तक इमाम हुसैन (अ0) मक्का मुकर्रमा में पनाहगुज़ीं रहे और यह ख़बर पूरी इस्लामी दुनिया में फैल गयी। एक तरफ तो जो लोग हुकूमते मुआविया की सख़्तियों से आजिज़ आ चुके थे और यज़ीद के मसनदे ख़िलाफत पर बैठने से मज़ीद ग़ैर मुतमइन थे, उन्होंने हज़रत इमाम हुसैन (अ0) को खुतूत लिखकर उनसे अपनी हमदर्दी का इज़्हार किया। दूसरी तरफ इराक़ और बिलखुसूस कूफा के मुसलमानों की तरफ से खुतूत का सिलसिला शुरु हो गया कि हज़रत इमाम हुसैन (अ0) इराक़ जाकर वहाँ के अवाम की क़यादत संभालें ताकि ज़ुल्म व ज़ियादती पर क़ाबू पाने के लिए सफ आराई शुरु की जा सके। यह सूरते हाल फितरी तौर से यज़ीद के लिए ख़तरनाक थी। मक्का मुकर्रमा में हज़रत इमाम हुसैन (अ0) का क़याम उस वक़्त तक जारी रहा जब तक कि हज का वह ज़माना नहीं आ गया जिस मौक़े पर तमाम दुनिया के मुसलमान गिरोही शक्ल में एहकामे हज की अदायगी के लिये मक्का मुकर्रमा में उमण्ड आते हैं। इसी बीच इमाम हुसैन (अ0) को यह मालूम हुआ कि यज़ीद के कुछ पैरो हाजियों की शक्ल में एहराम के मख़्सूस लिबास में हथियार छुपाकर हज के दौरान इमाम हुसैन (अ0) को क़त्ल करने के लिए मक्का मुकर्रमा में दाखिल हो गये हैं।(इरशाद पेज–201)

हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने हज के अरकान को मुख़्तसर करके मक्का छोड़ देने का फैसला किया। इस दौरान मुसलमानों की बड़ी तादाद से ख़िताब करते हुए आपने कहा कि वह मक्का छोड़कर इराक़ के लिये रवाना हो रहे हैं। (मनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द चार पेज–89) इस मुख़्तसर तक़रीर में आपने इस बात का भी इज़हार किया कि उन्हें शहीद कर दिया जायेगा लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिए कि वह उनके मक़सद के हुसूल में उनकी मदद करें और खुदा की राह में अपनी जाने क़ुर्बान करें। दूसरे दिन आप अपने अफ़रादे ख़ानदान और अपने साथियों के एक गिरोह के साथ इराक़ की तरफ कूच कर गये। इमाम हुसैन (अ0) ने यह इरादा कर लिया था कि वह यज़ीद के हाथ पर बैअत नहीं करेंगे। और इस बात से बख़ूबी वाक़िफ थे कि उन्हें क़त्ल कर दिया जायेगा। आप इस बात से बाख़बर थे कि बनी उमैय्या की फौजी ताक़त के मुक़ाबले में उनकी मौत नागुज़ीर है, जिसे बाज़ फिरक़ों की बदकिरदारी, उनमें रूहानी ताक़त की कमी और

ख़ुद एतमादी के फुक़दान के बाअिस अवाम और ख़ास तौर से इराक़ के मुसलमानों की हिमायत हासिल थी। मक्के के बाज़ मुमताज़ अफ़राद इमाम हुसैन (अ0) के सद्दे राह हुए और उन्हें उनके इरादे के पेशे नज़र आने वाले ख़तरे से आगाह किया। लेकिन आप ने जवाब में कहा कि उन्होंने बेअत करने और एक ग़ैर मुन्सिफ और ज़ालिम व जाबिर हुकूमत की हिमायत करने से इन्कार कर दिया है। आपने मज़ीद फरमाया कि उन्हें इस बात का इल्म है कि अगर वह मुड़े या वापस हुए तो उन्हें क़त्ल कर दिया जायेगा। (इरशाद पेज–201) उन्हें ख़ाना–ए–ख़ुदा के एहतेराम में मक्का छोड़ देना होगा। और अपनी खूँरेज़ी से ख़ाना–ए–काबा की हुरमत को पामाल नहीं होने दिया जायेगा। कूफे की राह में और शहर से चन्द दिनों की मसाफत के फासले पर आपको यह ख़बर मिली कि कूफे में यज़ीद के एजेण्ट ने आपके एलची हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील और कूफे में आपके एक मुक़तदर हिमायती को क़त्क कर दिया है और उनके पैरों में रस्सी जकड़कर कूफे की गलियों में उनकी तशहीर की जा रही है। (इरशाद पेज–204) शहर और उसके अतराफ में सख़्त पहरा बिठा दिया गया है। और दुश्मन के अनगिनत फौजी इमाम हुसैन (अ0) का इन्तिज़ार कर रहे हैं। आपके सामने इसके सिवाय कोई और रास्ता न था कि आप आगे बढ़ें और अपनी मौत को गले लगा लें। चुनानचे इमाम ने आगे बढ़कर शहीद हो जाने के अपने इरादे का पुरज़ोर इज़हार किया और अपना सफर जारी रखा। (इरशाद पेज–205)

कूफा से तक़रीबन सत्तर किलोमीटर के फासले पर वाक़ेअ कर्बला के रेगिस्तान में हज़रत इमाम हुसैन (अ0) और उनके असहाब को यज़ीद की फौज़ों ने घेर लिया। यह लोग आठ दिनों तक इस मक़ाम पर ठहरे रहे जिसके दौरान घेरा तंग हो गया और दुश्मन की फौज़ों की तादाद बढ़ती रही। आख़िर में हज़रत इमाम हुसैन (अ0) उनके अहले हरम और उनके चन्द साथियों को तीस हज़ार सिपाहियों की फौज ने नरग़े में ले लिया। (मनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द चार पेज–98) इन दिनों में हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने अपनी पोज़ीशन मुस्तहकम की और अपने असहाब का आख़री इन्तेख़ाब किया। शब में आप ने अपने अस्हाब को जमा किया और एक मुख़्तसर तक़रीर के दौरान आपने कहा कि हमें मौत और सिर्फ मौत का समना है। आपने मज़ीद कहा कि जहाँ तक दुश्मन का ताल्लुक़ है उसे सिर्फ हम लोगों से मतलब है। हम तुम पर से अपनी बैअत उठाये लेते हैं लिहाज़ा तुम में से जो भी जाना चाहे रात के अन्धेरे में फरार होकर अपनी जान बचा सकता है। इसके बाद आपने हुक्म दिया कि चिराग़ गुल कर दिया जाये। इस मौक़े पर आपके वह बहुत से साथी जो सिर्फ अपने मफाद की ख़ातिर आपके साथ हो लिये थे, वहाँ से मुन्तशिर हो गये, सिवाय उन मुठ्ठीभर हक़ पसन्दों, इमाम के तक़रीबन चालिस क़रीबी साथियों और बनी हाशिम के कुछ अफ़राद के जो वहाँ मौजूद रह गये थे।

(मनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द चार पेज–98)

जो लोग रह गये थे उनका इम्तिहान लेने के लिए इमाम हुसैन (अ0) ने उन्हें भी एक बार फिर इकटठा किया। आपने अपने साथियों और हाशमी क़राबतदारों से ख़िताब करते हुए एक बार फिर कहा कि दुश्मन को सिर्फ हमसे ग़र्ज़ है। हर शख़्स रात की तारीकी का फायदा उठाकर ख़तरे से बच सकता है। लेकिन इस बार इमाम हुसैन (अ0) के वफादार असहाब में से हर एक ने अपने अपने तौर पर यह जवाब दिया कि वह इस राहे

हक़ से एक लमहे के लिए भी पीछे नहीं हटेंगे जिसके हज़रत इमाम हुसैन (अ0) क़ाएद हैं, नीज़ यह कि वह उन्हें कभी तन्हा नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि वह इमाम के अहले हरम की हिफाज़त उस वक़्त तक करेंगे जब तक उनके जिस्म में ख़ून का एक क़तरा भी बाक़ी है और जब तक उनके हाथ में तलवार उठाने की ताक़त मौजूद है। (मनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द चार पेज–99)

माहे मोहर्रम की 9 तारीख़ को दुश्मन की तरफ से हज़रत इमाम हुसैन (अ0) को चैलेन्ज किया गया कि वह "बैअत या जंग" में से किसी एक का इन्तेख़ाब कर लें। इमाम हुसैन (अ0) ने इबादत करने की ग़र्ज़ से दुश्मन से एक शब की मोहलत माँगी और दूसरे दिन जंग के मैदान में उतरने का फैसला कर लिया।

(मनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द चार पेज–98)

10 मोहर्रम 61 हिजरी (मुताबिक़ 680 ई0) को हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने 90 अफ़राद से भी कम पर मुश्तमिल अपनी मुख़्तसर सी फौज को दुश्मन के सामने सफ आरा किया जिसमें चालीस असहाबे हुसैनी, यज़ीदी फौज के तक़रीबन तीस वह सिपाही जो जंग की रात को और दिन में दुश्मन की फौज से निकल कर इमाम हुसैन (अ0) की तरफ आ गये थे, नीज़ ख़ानदाने बनी हाशिम के अफ़राद शामिल थे, जिनमें हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के भाई, भतीजे, भाँजे और भाँजियाँ शामिल थीं। यह हज़रात आशूरा के दिन सुब्ह से अपनी आख़री साँस तक लड़े और आख़िर में हज़रत इमाम हुसैन (अ0), जवानाने बनी हाशिम और तमाम असहाबे हुसैन शहीद कर दिये गये। इन शोहदा में हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के दो बच्चे, जिनकी उम्रें 13 और 11 साल की थीं, एक पाँच साला बच्चा, नीज़ हज़रत इमाम हुसैन का एक शीरख़्वार बच्चा भी शामिल था।

जंग ख़त्म करने के बाद दुश्मनों ने हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के हरम मोहतरम को ताख़्त व ताराज किया और ख़ियामे हुसैनी में आग लगा दी। शोहदा के सरों को काट कर उनकी लाशों को पामाल किया और उन्हें मैदान में बेगोरो कफन छोड़ दिया, नीज़ इमाम हुसैन (अ0) की बेयारो मददगार और मुअज़्ज़ तरीन बीबियों और बच्चियों को क़ैदी बना लिया और शोहदा के सरों के साथ उन्हें कूफ़ा की तरफ ले गये। (बहारुल अनवार जिल्द–10 पेज–200,202,203) इन क़ैदियों में तीन मर्द थे, इमाम हुसैन (अ0) के बाइस साला फ़रज़न्द और चौथे इमाम हज़रत अली इब्नुल हुसैन (अ0) जो बीमार और चलने फिरने से माज़ूर थे, नीज़ उनके चार साला साहबज़ादे मुहम्मद बिन अली जो बाद में पाँचवें इमाम मुक़र्रर हुए, आख़री हज़रत हसन मुसन्ना थे जो हज़रत इमाम हसन (अ0) के साहबज़ादे और हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के दामाद थे और जो जंग के दौरान जख़्मी हो जाने की वजह से लाशों के दरमियान पड़े हुए थे। दुश्मनों ने उन्हें क़रीबुल मर्ग पाया था और एक जनरल की मुदाख़लत पर उनका सर क़लम नहीं किया था। उन्हें क़ैदियों के हमराह कूफ़ा और फिर वहाँ से यज़ीद के सामने दमिश्क़ ले गये।

कर्बला के वाक़ेए के वजूद में आने, अहलेबैते नबवी (स0) की मुख़द्दरात इस्मत व तहारत नीज़ बच्चों को क़ैदी बनाकर उन्हें दयार ब दयार फिराने और क़ैदियों के दरमियान मौजूद अली (अ0) की बेटी ज़ैनब (स0) और चौथे इमाम की तरफ से जा बजा की गयी तक़रीरों ने बनी उमैय्या को बेनक़ाब कर दिया। रसूले इस्लाम (स0) के अहले बैत की इस तज़लील ने मुआविया

के इस प्रोपगण्डे की धज्जियाँ उड़ा दीं जो वह बरसों से करता चला आ रहा था। नौबत यहाँ तक पहुँच गयी कि यज़ीद अवाम के दरमियान इस मामले पर इज़्हारे अफसोस करता था और उसका ज़िम्मेदार अपने ऐजेन्टों को गरदान्ता था। अगरचे वाक़ेआ–ए–कर्बला का असर देर में हुआ लेकिन यह वाक़ेआ हुकूमते बनी उमैय्या के पूरे दौर का सबसे बड़ा वाक़ेआ था। इस वाक़ेए ने शीअीयत की जड़ें और मज़बूत कर दीं। इसके फौरी असरात में वह बग़ावत है जो बाग़ियों के दरमियान खून आशाम जंगों की सूरत में बारह बरस तक जारी रही, जिसमें हर वह फ़र्द जो इमाम हुसैन (अ0) की शहादत में शरीक था सज़ा और इन्तेक़ाम से नहीं बच सका।

जिन लोगों ने हज़रत इमाम हुसैन (अ0) और यज़ीद की ज़िन्दगी की तारीख़ और उनके वक़्त के हालात का मुतालाअ किया है नीज़ तारीख़े इस्लाम के इस बाब का तजज़िया किया है, उन्हें इस में कोई ताज्जुब न होगा कि इन हालात के पेशे नज़र इमाम हुसैन के पास इसके अलावा और कोई चारा न था कि वह अपनी जान कुर्बान कर दें। अगर इमाम हुसैन यज़ीद की बैअत कर लेते तो इसका मतलब यह होता कि वह सरे आम इस्लाम की तौहीन करते जबकि यज़ीद ने अपने अमल से यह ज़ाहिर कर दिया था कि उसे इस्लाम और उसके क़वानीन का कोई पास नहीं है। बल्कि उसने बरसरे आम इस्लाम की असास और उसके क़वानीन को अपने पैरों तले रौंद डाला था। जो लोग यज़ीद के साथ थे अगर वह भी इस्लाम के अहकाम की मुख़ालफत करते तो इस्लाम के लिबास में करते और कम से कम रसमी तौर पर इस्लाम का एहतेराम ज़रूर करते नीज़ खुद के अस्हाबे रसूल (स0) होने पर फखर करते। इससे यह पता लगाया जा सकता है कि इन वाक़ेआत के मुफस्सिरीन का यह दावा बिलकुल ग़लत है कि हज़रत इमाम हसन (अ0) और हज़रत इमाम हुसैन (अ0) दो मुख़्तलिफुल मिज़ाज भाई थे जिनमें से एक ने सुलह का रास्ता अपनाया दूसरे ने जंग को पसन्द किया। इसलिए कि एक भाई ने मुआविया के साथ सुलह की जबकि उनके पास चालीस हज़ार सिपाहियों का लश्कर था। और इसके बरख़िलाफ दूसरा भाई सिर्फ चालीस नुफूस पर मुश्तमिल फौज के साथ यज़ीद से सफआरा हो गया। क्योंकि हम देखते हैं कि वही इमाम हुसैन (अ0) दस साल तक तो मुआविया की हुकूमत के तहत रहे मगर एक दिन के लिये यज़ीद की बैअत न की। इसी तरह उनके वह दूसरे भाई हैं जो मुआविया के मुख़ालिफत न करके दस साल तक उसकी हुकूमत के तहत रहे।

हक़ीकत में तो यह कहना चाहिए कि अगर हज़रत इमाम हसन (अ0) और हज़रत इमाम हुसैन (अ0) मुआविया से लड़ते तो वह यक़ीनन क़त्ल कर दिये जाते जिससे इस्लाम को कोई फायदा न पहुँचता और मुआविया जैसे चालाक सियासतदान की बज़ाहिर इस्लाम दोस्त पालीसी की वजह से उनकी मौत का कोई असर भी न होता जो अपने को सहाबी–ए–रसूल, कातिबे बारी और मोमिनीन का चचा समझता था। नीज़ अपनी हुकूमत को शरीअत के ढाँचे से ढके हुए था। इसके अलावा अपनी ख़्वाहिश की तकमील के लिये साज़िश रच कर उन हज़रात को उन्हीं के लोगों के हाथों क़त्ल करवा देता और सोगवारी का माहोल क़ायम करके उनके खून का इन्तेक़ाम लेने का उसी तरह से ढोंग रचता जिस तरह से उसने खुद को क़त्ले उसमान के इन्तेक़ाम का दावेदार ज़ाहिर किया था। □□□

बारहवें इमाम

हज़रते महदी आख़िरुज़्ज़माँ

(अज्जलल्लाहु तआला फरजहू)

आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी साहब

इमामे ज़माना पन्द्रह शाबान 225 हिजरी सामरा शहर में पैदा हुए आप (अ0) की वालिदा माजिदा का नाम नरजिस ख़ातून था और आपके वालिद इमाम हसन असकरी (अ0) थे आप (अ0) के वालिद ने पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के नाम पर आप (अ0) का नाम मुहम्मद रखा।

बारहवें इमाम महदी, क़ायम, इमामे ज़माना के नाम से मशहूर हैं। पैग़म्बरे अकरम (स0) ने बारहवें इमाम के मुताल्लिक़ इस तरह फरमाया है:–

इमाम हुसैन (अ0) का नवाँ फ़रज़न्द मेरे हमनाम होगा उसका लक़ब महदी है उसके आने की मैं मुसलमानों को खुशख़बरी सुनाता हूँ।

हमारे तमाम अइम्मा ने इमाम महदी (अ0) के आने की बशारत और खुशख़बरी दी है और फरमाया है कि :–

इमाम हसन असकरी (अ0) का फ़रज़न्द महदी (अ0) है जिसके जुहूर और फ़तह की तुम्हें खुशख़बरी देते हैं। हमारा इमाम महदी बहुत तवील ज़माने तक नज़रों से ग़ायब रहेगा एक बहुत तवील ग़ैबत के बाद ख़ुदा उसे ज़ाहिर करेगा और वह दुनिया को अद्ल व इन्साफ से पुर कर देगा।

इमामे ज़माना पैदाइश के वक़्त से ही ज़ालिमों की निगाहों से ग़ायब थे ख़ुदा व पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के हुक्म से अलाहेदा ज़िन्दगी बसर करते थे सिर्फ बाज़ दोस्तों के सामने जो बा एतमाद थे ज़ाहिर होते थे और उनसे गुफ्तगू करते थे हज़रत इमाम हसन असकरी (अ0) ने अल्लाह तआला के हुक्म और पैग़म्बरे अकरम (स0) की वसिय्यत के तहत आप (अ0) को अपने बाद के लिए लोगों का इमाम मुअय्यन फरमाया।

इमामे ज़माना (अ0) अपने वालिद के बाद मन्सबे इमामत पर फाएज़ हुए और बचपन से ही उस ख़ास इरतेबात से जो वह ख़ुदा से रखते और अल्लाह ने उन्हें इल्म इनायत फरमाया था, लोगों की रहनुमाई और फ़राएज़े इमामत को अन्जाम दिया करते थे अल्लाह ने अपनी बेपनाह क़ुदरत से आप (अ0) को एक तवील उम्र इनायत फरमाई है और आप (अ0) को हुक्म दे दिया है कि ग़ैबत और पर्दे में ज़िन्दगी गुज़ारें और पाक दिलों को अल्लाह की तरफ रहनुमाई फरमाएँ अब हज़रत हुज्जत इमामे ज़माना नज़रों से ग़ायब और पोशीदा हैं लेकिन लोगों के दरमियान आमद व रफ्त करते है। और लोगों की मदद करते है और इज्तेमाआत में बग़ैर इसके कि कोई आपको पहचान सके शिरकत फरमाते हैं इस लिहाज़ से आप (अ0) पर जो अल्लाह ने ज़िम्मेदारी डाल रखी है उसे

अन्जाम देते हैं और लोगों को फैज़ पहुँचाते हैं और लोग भी उसी तरह जिस तरह सूरज में आ जाने के बावजूद इससे से फैज़ उठाते है आप (अ0) के वजूदे गिरामी से बावजूदे कि आप ग़ैबत में हैं फायदा उठाते हैं।

ग़ैबत और इमाम ज़माना (अ0) का ज़हूर

इमाम ज़माना (अ0) ग़ैबत उस वक़्त तक बाक़ी रहेगी जब तक दुनिया के हालात हक़ की हुकूमत कुबूल करने के लिए तैय्यार न हों और आलमी इस्लामी हुकूमत की बुनियाद के लिए मुक़द्दमात फराहम न हो जाएँ जब अहले दुनिया कसरते मसाएब और जुल्म व सितम से थक जायेंगे और इमाम ज़माना (अ0) का ज़ुहूर खुदावन्दे आलम से तहे दिल से चाहेंगे और आप (अ0) के ज़ुहूर के मुक़द्दमात और अस्बाब फराहम कर देंगे उस वक़्त इमामे ज़माना (अ0) अल्लाह के हुक्म से ज़ाहिर होंगे और आप (अ0) उस कुव्वत और ताक़त के सबब से जो अल्लाह ने आपको दे रखी है जुल्म का ख़ातमा कर देंगे और अमनो अमाने वाक़ई को तौहीद के नज़रिये की असास पर दुनिया में राएज करेंगे हम शीआ ऐसे पुरअज़मत दिन के इन्तिज़ार में हैं और उसकी याद में जो दरहक़ीक़त एक इमाम और रहबरे कामिल की याद है अपने रुश्द और तकामुल के साथ तमाम आलम के लिए कोशिश करते हैं और हम हक़ पज़ीर दिल से इमाम महदी (अ0) के सआदत बख़्श दीदार की तमन्ना करते हैं और एक बहुत बड़े हदफे इलाही में कोशाँ है अपनी और आम इन्सानों की इस्लाह की कोशिश करते हैं और आप (अ0) के ज़ुहूर और फतह के मुक़द्दमात फराहम कर रहे हैं। □□□

जिसने महदी अ० का इन्कार किया है
यक़ीनन उसने कुफ्र किया है।
(रसूले खुदा स0)

पैग़म्बरे वफा हज़रते अब्बास (अ0) और इबादते खुदा

मौलाना अली हसनैन नजफी साहब

मेरी मुराद पैग़म्बरे वफा और इबादते खुदा से ऐसी अज़ीमुल मरतबत शख़सियत से है जिसने अपने पुरखुलूस अमल और आला किरदार से यह साबित कर दिया है कि खुदा मौजूद है और वह एक है अकेला है उसका कोई शरीक नहीं है और वही लायक़े इबादत है। उसी एक खुदा की इबादत व बन्दगी करनी चाहिए, उसी अज़ीमुल मरतबत का नाम अब्बास है और उसकी कुन्नियत अबुलफ़ज़ल है और वह बाबुलमुराद है। इसी शख़सियत को क़मरे बनी हाशिम भी कहा जाता है।

बनी हाशिम का यह चाँद माँ की आग़ोश में चमका, बहन और भाई की आग़ोश में चमका, और एक बार जब अपने शफ़ीक़ बाप के ज़ानों की ज़ीनत बना तो अली (अ0) जैसे इबादतगुज़ार, अली (अ0) जैसे खुदा परस्त ने इरशाद फरमाया अब्बास कहो एक, अब्बास ने कहा एक, तब अली मुरतज़ा ने कहा अब्बास कहो दो, तो जनाब अबुलफ़ज़ल ने अर्ज़ किया बाबा मैंने जिस ज़बान से एक कहा है उस ज़बान से दो कैसे कह सकता हूँ। बेहतरीन बाप का बेहतरीन बेटा था। हक़ीक़त में अपने मान रखने वालों को यह दर्स देता था कि अगर अली (अ0) की आग़ोश में कोई बच्चा आता है तो बाप की ज़ीनत होता है। बाप के लिए ऐब नहीं होता इसी तरह मौला अली (अ0) उम्मत के बाप हैं। उम्मत से फरमा रहे हैं मेरे लिए ज़ीनत बनो, मेरे लिए ऐब न बनो। अब्बास अपने बाप अली मुर्तज़ा के लिए कमाले मारफत व कमाले इबादत की वजह से आग़ोश की ज़ीनत थे और बता रहे थे कि मैं अपने बाप से इस क़द्र क़रीब अपनी ज़ाती सलाहियत और खुदा शनासी की वजह से हूँ। अब अगर कोई मौला अली (अ0) से क़रीब होना चाहता है तो वह खुदा परस्ती और खुदा शनासी की सलाहियत भी पैदा करे।

वाकेआ–ए–कर्बला में अब्बास ने किसी मौक़े पर भी अपने माबूद को नहीं भुलाया। ख़याल तो कीजिये कि इमाम हुसैन (अ0) पर उनकी आल पर, उनके अस्हाब पर, उनके बच्चों पर पानी बंद कर दिया गया। क़मरे बनी हाशिम खुद भी प्यासे हैं और अब्बास बच्चों की तिलमिलाहट को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। अब्बास को ज़ाते वहदहू ला शरीक पर भरोसा है इसलिए वह पानी हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। वह जानते हैं कि खुदा ने इस्माईल (अ0) की शिद्दते प्यास पर रहम खाया था और उनके क़दम की रगड़ से बतहा की ज़मीन पर एक चश्मा जारी कर दिया था। अबुलफ़ज़ल को मालूम था कि खुदावन्दे आलम ने जनाब अब्दुल मुत्तलिब को ख़्वाब दिखाया था कि मक्का में फलाँ जगह पर पानी मौजूद है और ख़्वाब की बिना पर अब्दुल मुत्तलिब ने जब उस जगह को तलाश करके पानी हासिल करने की कोशिश की थी तो उन्हें कुआँ मिला इसलिए कर्बला में हज़रत अब्बास ने कुएँ खोदे मगर मसलहते खुदावन्दी इसी में थी कि उन कुओं से पानी न निकले लेकिन अब्बास ने कुआँ दीन की नुसरत और मदद में खोदा था। उन्हें अल्लाह के

इबादतगुज़ार बन्दों की जान बचाने की फ़िक्र थी। इसलिए जनाब अबुलफ़ज़ल ने इमाम आली मक़ाम के कई एक जाँनिसारों को अपने साथ लिया और फुरात का इरादा किया और सख़्त जंग के बाद बीस मशकें पानी ले आये और इस तरह खुदावन्दे आलम की बारगाह में उसकी बड़ाई और अज़मत का इक़रार किया। मगर शदीद गर्मी में वह पानी किस वक़्त तक चलता और फिर वह तारीखें आ गयीं कि पानी ख़त्म हो गया। दरया पर सख़्त पहरा हो गया और खुदा परस्तों के इम्तिहान का वक़्त आ गया।

जिस तरह इमाम हुसैन (अ0) के अस्हाब व अन्सार प्यासे रहकर खुदा को याद कर रहे थे। जिस तरह हुसैन (अ0) की बहन प्यास की शिद्दत में खुदा की इबादत कर रही थीं। जिस तरह प्यास की शिद्दत में हुसैन (अ0) के बच्चे अल्लाह को याद कर रहे थे अब्बास भी अपने माबूद को याद कर रहे थे। दो तीन रोज़ तक प्यास का इम्तिहान देते रहे। अब्बास को शिम्र ढूँढता हुआ आया और क़मरे बनी हाशिम से कहने लगा अब्बास! हुसैन का साथ छोड़ दो मैं तुम्हारे लिए अमान नामा लाया हूँ। अब्बास ने शिम्र की दरख़्वास्त को ठुकराते हुए कहा : खुदा की अमान इब्ने सुमैय्या की अमान से बेहतर है और इस तरह क़मरे बनी हाशिम अब्बास (अ0) ने एक बार फिर अपनी खुदापरस्ती का सबूत दिया और बता दिया कि खुदा की बन्दगी हमारी रग–रग में समाई हुई है। मैं उसका बन्दा तन्हा ज़बान से नहीं बल्कि मेरा दिल, मेरी ज़बान, मेरा खून सब खुदा की बन्दगी का एतराफ कर रहे हैं।

अब्बास (अ0) ने इमाम हुसैन (अ0) के साथ शबे आशूर इबादत की। अबुलफ़ज़ल ने इमाम हुसैन (अ0) की इक़्तेदा में सुब्हे आशूर नमाज़ पढ़ी.............जब ग़ाज़ी का शाना क़लम हुआ तो अब्बास ग़ाज़ी ने दुश्मनों से ख़िताब करते हुए कहा तुम ने मेरे दाहिने बाजू को काट दिया है। याद रखो तुम मेरे शाने को तो क़लम कर सकते हो लेकिन मुझे दीन की हिमायत और मदद से जुदा नहीं कर सकते हो मैं हमेशा दीन की मदद करता रहूँगा। अब्बास के सामने खुदा था, अब्बास के दिल में खुदा था, अब्बास से खुदा रगे गर्दन से भी ज़ियादा क़रीब था। जब क़मरे बनी हाशिम का दायाँ शाना दुश्मनाने इस्लाम ने काट दिया तो फरमाया ऐ नफ्स तू कुफ्फार से ख़ौफ न खा तुझको खुदावन्दे आलम की रहमत व मग़फिरत की बशारत हो। ऐ नफ्स तू अपने नबी के साथ वह नबी जो ताहिरीन और पाकीज़ा जानों के सरदार हैं। ऐ रब तू इन गुनाहगार और नाफरमान और ज़ालिमों को जहन्नम में दाख़िल कर।

आप फरमाते थे कि मैं उन कटे हुए शानों से तमाम नबियों के सरदार रसूले अकरम (स0) से और अपने बुजुर्ग बाप अली मुर्तज़ा (अ0) से मुलाक़ात करूँगा। हमारे चौथे इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0) क़मरे बनी हाशिम की अज़मत व बुजुर्गी और उनकी खुदापरस्ती और खुदाशनासी की तारीफ करते हुए इरशाद फरमाते है : खुदा वन्देआलम मेरे चचा अब्बास (अ0) पर अपनी रहमत नाज़िल करे। उन्होंने बड़ा ईसार फरमाया। अपनी जान को अपने भाई पर कुर्बान कर दिया और अपने दोनो हाथों को आँजनाब पर निसार कर दिया तो खुदावन्देआलम ने इसके बदले दो पर अता किये और अब वह हज़रत जाफरे तैय्यार की तरह जो कि आँजनाब के चचा थे फरिश्तों के साथ जन्नत में उड़ते है और रोज़े क़यामत खुदावन्देआलम की बारगाह में वह बुलन्द मक़ाम होगा जिसे देखकर तमाम शोहदा रश्क करेंगे।

क़ैसर बस्तवी कहते हैं :

नहर पर शाने कटा कर दीन को शाने दिये
दूध था तेरा जो ग़ाज़ी ने पिया उम्मुल बनीन

□□□

''वमिन कुल्लि शैइन ख़लक़ना ज़ौजैनी लअल्लकुम तज़क्करून''

(अलज़ारियात आयत–49)

काएनात में शादी करने का दस्तूर

हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान

जमादात में शादी का निज़ाम

आदिल व हाकिम और हिकमत वाले खुदा ने काएनात के मोहकम निज़ाम और पैदावार के मैदान में हर चीज़ का जोड़ा पैदा किया है। इस हक़ीक़त से काएनात की कोई चीज़ भी अलग नहीं है। इस नाक़ाबिले इन्कार हक़ीक़त की तरफ कुर्आन मजीद ने उस वक़्त कइ आयतों में इशारा किया था जब इन्सान का इल्म और उसकी तहक़ीक़ इस हद तक नहीं पहुँची थी। सूरए ज़ारियात की 49वीं आयत में बयान हुआ है। हस्ती के मौजूदात चाहे उनका ताल्लुक़ जमादात से हो या पैड़–पौधों से, जानवरों और इन्सानों से हो, सबको जोड़े की शक्ल में पैदा किया गया है।

यह अज़ीम ख़बर, इल्मी बात, वाज़ेह बयान वह भी तमाम मख़लूक़ात के बारे में............इल्मी तरक़्क़ी से सदियों पहले, मक्का व मदीने जैसे शहर में कि जहाँ एक लफ़्ज़ लिखने वाले और पढ़ने वाले का वजूद नहीं था, जहाँ किताब व मदरसा नहीं था। कुर्आन मजीद का मोजज़ा है और इसके अस्ली होने की पक्की दलील, इसके इल्मी होने की खुली हुई निशानी और नबुवत ख़तमुन्नबिय्यीन की सदाक़त का क़वी सबूत है।

काएनात के दूसरे मसाएल के बारे में कुर्आन मजीद में ऐसी आयतें मौजूद हैं कि जिनको देखकर आज के साइंसदाँ उंगलियाँ मुँह में दबा लेते हैं और हैरत में डूब जाते हैं। कुर्आन मजीद किसी भी इन्सान के लिए चाहे वह किसी भी मर्तबे व मन्ज़िलत का हो, अपनी हक़्क़ानियत के बारे में शक की गुन्जाइश नहीं छोड़ता है और इस बात को साबित करता है कि वह इन्सान की ज़िन्दगी के रास्ते पर चिराग़े हिदायत है।

''ज़ालिकल किताबु ला रइबा फ़ीही''

(सूरए बक़रह आयत–3)

उसने हर क़िस्म के जोड़े के अन्दर एक–दूसरे की मुहब्बत और एक–दूसरे के लिये कशिश पैदा की है ताकि यह कशिश और यह ताल्लुक़ एक ख़ास निज़ाम और मख़सूस हालात के तहत, चाहे निज़ामे पैदाइश में, चाहे निज़ामे शरीअत में, शादी करना, जोड़े बनाना और पैदाइश और नसल बढ़ने पर ख़ात्म है और पैदाइश के निज़ाम के बाक़ी रहने की वजह क़रार पाए और हर जिन्स व नौअ के मौजूदात ज़िन्दगी की लज़्ज़तों, हयात की मसररतों, अपने और दूसरे के वजूद से बाख़बर हो सकें।

जमादात की दुनिया में नसल के बढ़ने का रास्ता चाहे वह किसी भी सूरत में हो, एक माद्दे का दूसरे माद्दे से आपस में मिलने की सूरत में होता है जिसके नतीजे में तीसरा मद्दा सामने आता है जैसे आक्सीजन व हाइड्रोजन का मेल। यह दोनों ही गर्म और जला देने वाले हैं। इन दोनों गर्म और जला देने वाली गैसों की मिलावट का नतीजा ज़िन्दगी की ख़ुशनुमा दौलत पानी है या मिलने और जज़्ब हो जाने से बहुत से नतीजे

सामने आते हैं। या एक दूसरे के ख़िलाफ मिलाने से बेशुमार फायदे हासिल होते हैं। यह सब काम करने वाली ताक़त की हैरतअंगेज़ और आलमीन के परवरदिगार की रहमत का नतीजा है।

यही ताल्लुक़ जो दो या इससे ज़ियादा माद्दों के दरमियान बरक़रार होता है या जमादात के दरमियान एक–दूसरे से जो इश्क़ है यही इनकी नसल बढ़ने, और इनकी क़िस्म के बाक़ी रहने और निज़ामे पैदाईश और हस्ती की खूबसूरती की वजह है।

वाक़ई यह कितनी हैरतअंगेज़ ताक़त और कितना अज़ीम इरादा है कि जिसने दो जलते हुए और जला देने वाले माद्दों के दरमियान ऐसी उलफत और इश्क़ की ऐसी कैफियत पैदा कर दी है कि जिससे इन दोनों के मिलने से ठण्डा पानी और साफ व शफ़्फ़ाफ़ चश्मा और जोश मारते हुए नदी नाले और बड़े–बड़े दरया, अज़ीम समन्दर और रिम–झिम बारिश वजूद में आ गयी!!!

यह कितनी हैरतअंगेज़ ताक़त है कि जिसने मुख़तलिफ माद्दों के मेल से काली मिट्टी के सीने में पत्थर के दिल में हीरे पैदा किये हैं।

यह कैसा ज़बरदस्त इरादा है जिसने चन्द माद्दों को मिलाकर यमन के कानों में लाल अक़ीक़ और नीशापुर की ख़ाक में आसमानी रंग के फीरोज़े पैदा किये और ज़मीन में हैवानात के गौहर को मिलाकर इन्सान के काम आने वाली हज़ारों क़िस्म की चीज़ें पैदा करता है।

यह कितनी अज़ीम रहमत और मेहरबानी है कि जो मिट्टी और पत्थर को और दूसरे माद्दों को मिलाकर सोने चाँदी जैसी धात पैदा करता है और लोहा व सीमेन्ट पैदा करता है।

यह कौन सा इरादा व हिक्मत है कि जो माद्दों की तरकीब से अपने बन्दों को नेमतों से मालामाल करता है। यह कौन सा इरादा व हिकमत है कि जिसने सूरज व ज़मीन और आग के इस गोले के तमाम माद्दों और ज़मीन के माद्दों के दरमियान ऐसा इश्क़ व मुहब्बत पैदा कर दिया है कि सूरज के माद्दों की ज़मीन के माद्दों से मिलावट और मिलाप के नतीजे में खुद क़ुर्आन के बक़ौल इतनी नेमतें वजूद में आती हैं कि जिनका शुमार मुमकिन नहीं है।

खुदा वह है कि जिसने जमीन और आसमान को पैदा किया और ऊपर से पानी को नाज़िल किया है और इसके ज़रिये मेवों को तुम्हारी रोज़ी क़रार दिया है और कश्ती को तुम्हारे मातहत कर दिया है ताकि दरया में उसके हुक्म से चले और ज़मीन के ऊपर बहते हुए दरयाओं को तुम्हारे इख़्तियार में दे दिया है और चाँद व सूरज को, कि दोनों ही हरकत में हैं तुम्हारे लिये बना दिया है रात दिन को तुम्हारे मातहत कर दिया है और जो कुछ तुम उससे तलब करते हो वह तुम्हें देता है अगर खुदा की नेमतों को शुमार करना चाहो तो उसकी नेमतों को हरगिज़ शुमार नहीं कर सकते।

(सूरए आले इमरान आयत–191)

माद्दों की कशिश और माएल होना, मिलना और जज़्ब होना और उनके सही और ग़लत होने

का अन्दाज़ और पैदाइश व बढ़ोत्तरी–ए–नसल के लिए उनके दरमियान आशिक़ाना ताल्लुक़ ख़ास क़ानूनों की बुनियाद पर है और आदिलाना है। इस कशिश और मैलान में बेकार कुछ नही है और इस मुहब्बत और ताल्लुक़ में सुस्ती नहीं आती है। इस हसीन व आशिक़ाना दुनिया में लड़ाई व इख़्तेलाफ नहीं है और इस मुहब्बती शादी के बाद तलाक़ व जुदाई का कोई मतलब नही है। अगर इस लम्बी चौड़ी ख़िलक़त में इख़्तिलाफ व नाराज़गी और तलाक़ का मफहूम होता और जुदाई व अलगाव की गुन्जाइश होती तो हर तरफ ख़राब हरकतें और फसाद ही फसाद होते, हालात साज़गार न रहते बल्कि बिसात ही उलट जाती।

जमादात के हर माद्दे का मख़सूस वज़न और मुअय्यन फासला है और हर एक अपने हाल के मुताबिक़ हरकत व बढ़ोत्तरी की मन्ज़िलें तय कर रहा है और हर एक की दूसरे से मिलावट बराबर होने की बुनियाद पर होती है। माद्दे अपने मख़सूस और मुअय्यन निज़ाम से जुदा नहीं होते हैं और इस बेहतरीन निज़ाम के तहत जहाँ भी होते हैं अपने वजूद व क़ानून की रिआयत करते हैं।

''न सूरज चाँद तक पहुँच सकता है और न रात दिन से पहले हो सकती है और इनमें से हर एक अपनी–अपनी जगह और घेरे में तैरते रहते हैं।'' (सूरए यासीन आयत–40)

ऊपरी दुनिया के माद्दे वज़न, बनावट, लम्बाई, चौड़ाइ, गहराइ, रंग, सिफात और दूरी उनमें से सूरज व ज़मीन के दरमियान की दूरी जो कि 1500 मिलियन किलोमीटर है, में कभी कमी बेशी नहीं होती है। अगर यह दूरी ज़ियादा हो जाए तो ज़मीन की सारी चीज़ें जम जाएँ और अगर कम हो जाए तो ज़मीन की सारी चीज़ें जल जाएँ। इसमें खुदा का इल्म व अद्ल और उसकी न ख़त्म होने वाली हिकमत के अलावा कि जिसकी बुनियाद पर दुनिया का निज़ाम चल रहा है और कुछ देखने में नहीं आता है। समझदार, इन्साफ पसन्द, रौशन ख़याल, खुली आखें रखने वाले और पाकीज़ा निज़ामे हस्ती को दिल की आखों से देखते हैं तो वह खुशू व खुज़ू के साथ इसके पैदा करने वाले और इस हैरतअंगेज़ काएनात को बनाने वाले को याद करके तहेदिल से कहते हैंः–

''रब्बना मा ख़लक़्ता हाज़ा बातिला''

(सूरए आले इमरान आयत–191)

ऐ हमारे परवरदिगार! तूने इस हस्ती को बेकार नहीं पैदा किया है।

इसमें कोई शक नहीं है कि काएनात के ज़र्रे–ज़र्रे में बनावट, सजावट, हद और हक़ और हक़ीक़त कारफरमा है और तमाम मौजूदात के वजूद में खुदा के नाम और सिफात साफ हैं और उसके नाम व सिफात के ख़त इतने रौशन है कि जिन्हें अनपढ़ भी महसूस कर सकता है।

इससे भी ज़ियादा हैरतअंगेज़ बात यह है कि तमाम मौजूदात अपने ख़ास निज़ाम के साथ अपने महबूब व मक़सूदे परवरदिगार तक पहुँचने के लिए सीधे रास्ते पर चल रहे हैं।

''व अन्ना इला रब्बिकल मुन्तहा''

(सूरए नज्म आयत–42)

और बेशक सबकी आख़री मन्ज़िल परवरदिगार की बारगाह है।

□□□

इदारा

मुख्य समाचार

रसूले अकरम (स0) की जाए विलादत का इनहिदाम इस्लामी पहचान का ख़ातमा : मौलाना कल्बे जवाद

लखनऊ। जुमा के मौक़े पर तारीख़ी आसफी मस्जिद में मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब ने हज़ारों बन्दगाने खुदा को दीन और शरीअत पर चलने की तलक़ीन करते हुए कहा कि यह दुनिया एक इम्तिहानगाह है। हर शख़्स को अच्छे या बुरे कामों का हिसाब बारगाहे खुदावन्दी में पेश करना है जिससे कोई चीज़ छुपी नहीं है और इन्सान की हक़ीक़ी ज़िन्दगी मौत के बाद शुरु होती है जो हमेशा बाक़ी रहने वाली है। अगर इन्सान दुनिया में अच्छे काम करता है तो उसका फल दुनिया और आख़िरत में मिलता रहेगा और अगर बुरे काम करे तो उसके गुनाहों की सज़ा भी बर्दाश्त करना पड़ेगी।

मौलाना कल्बे जवाद साहब ने ईरान के नये चुने हुए सदर डाक्टर महमूद अहमदी नज़ाद की तारीफ करते हुए कहा कि वह जब तेहरान के मेयर थे तब उन्होंने शहर की खुद सफाई करके एक मिसाल क़ायम की थी और आज ईरान के सदर होते हुए भी अपने ज़ाती मकान में रहते हैं और ज़ाती गाड़ी इस्तेमाल करते हैं। उन्होंने सदरे ईरान के हक़ में दुआइया कलमात अदा करते हुए कहा कि परवरदिगार उन्हें दुश्मनों के शर से महफूज़ रखे।

मौलाना कल्बे जवाद ने सऊदी अरब में रसूले अकरम (स0) की जाए विलादत को मुनहदिम करने के मन्सूबे की मुख़ालफत करते हुए कहा कि मक्का और मदीना की बची खुची इमारतों को मुनहदिम करने की एक आलमी सज़िश है और किसी रोज़ यह भी हो सकता है कि कोई बुलडोज़र रसूले अकरम (स0) के मकान को दफन कर दे।

मौलाना कल्बे जवाद साहब ने कहा कि मक्का और मदीना के आख़री दिनों को हम सब देख रहे हैं मदीने में तो बुरी तरह से तबाही मचाइ गयी और अब वहाँ चौदह सौ साल पुरानी तारीख़ी इमारतों में से चन्द ही बाक़ी हैं। शहरे मक्का को बढ़ाने और जदीद ज़रूरतों को पूरा करने का जुनून सर चढ़कर बोल रहा है। उन्होंने बताया कि क़ौमें अपनी विरासत को महफूज़ करती है और उनके बचाव में जानें कुर्बान करती हैं लेकिन सऊदी अरब में हालात बिलकुल उलट हैं। बिर्टेन और अमरीका की नक़ल करने वाली हुकूमतें इन मुल्कों के उन उसूलों की तक़लीद क्यों नहीं करती जो अपने माज़ी की विरासत को महफूज़ करने में लगे हुए हैं। उन जगहों को यह ताक़तें बचाकर रखे हुए हैं जहाँ आलमी जंग में बमबारी हुई थी और बमों के निशान हैं। मौलाना कल्बे जवाद साहब ने अफसोस ज़ाहिर करते हुए कहा कि मक्का और मदीना की तारीख़ को ख़त्म करने का मतलब इस्लामी पहचान को भी ख़त्म करना है। इन जगहों से अल्लाह का पैग़ाम दुनिया में फैलाया गया और इन मुक़द्दस जगहों की इन्तिहाइ अहमियत है। उन्होंने याद दिलाया कि जन्नतुल बक़ीअ और दूसरी अहम जगहें पहले ही बरबाद की जा चुकीं हैं।

मौलाना ने मुसलमान सियासी रहनुमाओं पर इज़हारे अफसोस करते हुए कहा कि इनकी हैसियत किसी भी पार्टी में एक ग़ुलाम से ज़ियादा की नहीं है और वह खुद अपनी क़ौम के लिए कुछ नहीं करते। वक़्फ हुसैनाबाद की ज़मीनों और मुस्लिम इलाक़ों में शराब ख़ाने खुल रहे हैं जिससे समाज में तबाही फैलने का सख़्त ख़तरा है। मौलाना ने कहा कि जो लोग कहते हैं कि तहरीक नाकाम हो गयी है उनके लिए कहना मुनासिब होगा कि हम अक़लियत दर अक़लियत हैं और हमारे पास न दौलत है न सियासी नुमाइन्दगी, जो हैं वह भी सरकारी ग़ुलाम हैं। सिवाए ज़ुल्म पर एहतेजाज करने के हमारे पास दूसरा कोई रास्ता नहीं है। मौलाना ने कहा कि जिस क़ौम के पास ताक़त होती है, हुकूमत करने वाली पार्टियाँ भी उन्हीं की सुनती हैं। हमारी ताक़त इत्तेहाद और एहतेजाज है।

डाक्टर महमूद अहमदी नेज़ाद जमहूरी इस्लामी ईरान के नये राष्ट्रपति मुन्तख़ब

जमहूरी इस्लामी ईरान के रहबरे आला सै0 अली ख़ामेना-ई मद्दज़िल्लहू की तौसीक़

तेहरान। डाक्टर महमूद अहमदी नेज़ाद ईरान के नये राष्ट्रपति बन गये। इस्लामी जमहूरी ईरान के रहबरे मुअज़्ज़म आयतुल्लाहिल उज़्मा सै0 अली ख़ामेना–ई मद्दाज़िल्लहुल आली ने उनके चुने जाने की तौसीक़ कर दी। रुख़सत पज़ीर राष्ट्रपति हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद ख़ातमी ने एक सरकारी तक़रीर में आयतुल्लाह ख़ामेना–ई का तौसीक़नामा पढ़कर सुनाया कि : ''मैं अवाम के फैसले को मन्ज़ूर करते हुए डाक्टर महमूद अहमदी नेज़ाद को इस्लामी जमहूरी ईरान का राष्ट्रपति मुक़र्रर करता हूँ।''

डाक्टर महमूद अहमदी नेज़ाद ने क़ुर्आन पाक पर हाथ रखकर ओहदे और राज़दारी की शपथ ली। बाद में अपनी तक़रीर के दौरान उन्होंने कहा कि इस इस्लामी हुकूमत का मक़सद सिर्फ और सिर्फ अवाम की ख़िदमत करना है। उन्होंने कहा कि हम बैनुलअक़वामी क़ानूनों का एहतेराम करते हैं लेकिन हम उन ताक़तों के आगे नहीं झुकेंगे जो हमारे इख़्तियारात हम से छीनना चाहते हैं। इस वक़्त यूरोपी यूनियन के साथ जौहरी मामले को हल करना और अवाम को समाजी इन्साफ दिलाना उनके अव्वलीन मक़ासिद में शामिल है। याद रहे कि ईरान के जौहरी प्रोग्राम पर बैनुलअक़वामी बिरादरी को एतराज़ है। अहमदी नेज़ाद ने कहा कि हम सबके लिए अमनो अमान और इन्साफ चाहते हैं लेकिन कुछ मुल्क अमन के नाम पर धमकियाँ दे रहे हैं।

अमरीका इराक़ में हार की कगार पर बिर्टेन के मिम्बर पार्लियामेन्ट जार्ज गेलवे का बयान

बिर्टेन। बिर्टेनी मिम्बर पार्लियामेन्ट जार्ज गेलवे ने कहा है कि बिर्टेन और अमरीका बग़दाद के साथ ''ज़िना बिलजब्र'' कर रहे हैं। मध्य एशिया के दौरे के दरमियान उन्होंने कहा कि ग़रीब इराक़ी इन्तिहाइ सादा हथियारों से अपने शहरों के नाम सितारों पर लिख रहे हैं। रेस्पेक्ट पार्टी के एम0पी0 जार्ज गेलवे ने कहा कि अमरीका इराक़ में जंग हार रहा है। लेबर पार्टी के एम0पी0 ऐरक जाएस ने जार्ज गेलवे के बयान पर तबसेरा करते हुए कहा कि इससे किसी हद तक बिर्टेनी फौजियों के लिये ख़तरे में बढ़ोत्तरी हुई है। जार्ज गेलवे ने कहा कि हम नहीं जानते कि वह कौन हैं, हमें उनके नाम नहीं मालूम, हमने कभी उनके चेहरे नहीं देखे, वह अपने शहीदों की फोटो दीवारों पर नहीं लगाते, हमें उनके रहनुमाओं के नाम नहीं मालूम। जार्ज गेलवे ने बी0बी0सी0 को बताया कि वह बिर्टेनी और अमरीकी फौजों को इराक़ से वापस बुलवाकर खून ख़राबा रोकना चाहते हैं। जार्ज गेलवे ने कहा कि बिर्टेनी फौजियों की जान को टोनी ब्लेयर की हुकूमत ने ख़तरे में डाला था। उन्होंने कहा कि जिन मुल्कों पर अमरीका और बिर्टेन ने क़ब्ज़ा किया है वह उनके हाथों ''ज़िना बिलजब्र'' का शिकार हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि यरोशलम और बग़दाद ग़ैरमुलकियों के हाथ में हैं जो उन के साथ अपनी मनमानी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारे फौजियों के लिये नफरत वह पैदा कर रहे हैं जिन्होंने उन्हें इराक़ में तैनात किया न कि हमारी तरह के उन लोगों ने जो कि उनको मुल्क वापस बुलवाना चाहते है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि अगर तादाद की बात की जाए तो जार्ज बुश और टोनी ब्लेयर की हाथों पर सबसे ज़ियादा खून है।

शैताने रजीम कहने पर यज़ीदी फिरक़े वालों का एहतेजाज

बग़दाद। इराक़ के शुमाली हिस्से कुर्दिस्तान में बसने वाले यज़ीदी फिरक़े ने वज़ीरे आज़म इब्राहीम जाफ़री के हर तक़रीर से पहले ''अउज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिररजीम'' पढ़ने पर एतराज़ किया है और कहा कि इससे उनके मज़हबी जज़्बात मजरूह होते हैं। यज़ीदी फिरक़े से ताल्लुक़ रखने वाले यह लोग मुल्के तूस या मोर की परसतिश करते हैं और उसको शैतान कहते हैं। इराक़ में तक़रीबन पाँच लाख अफराद यज़ीदी फिरक़े से ताल्लुक़ रखते हैं। बी0बी0सी0 के मुताबिक़ इस फिरक़े के नुमाइन्दे कामरान ख़ैरी का कहना है कि इब्राहीम जाफरी के हर तक़रीर से पहले ''अउज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिररजीम'' के कलमात पढ़ने से उनके जज़्बात मजरूह होते हैं। यज़ीदी फिरक़े से ताल्लुक़ रखने वाले शैतान को ख़ुदा मानते हैं और उसको बदी की कुव्वत तसलीम नहीं करते।